हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 08 -14 February 2026

दिशाहीन सोच

अस्वस्थ युवा

गोमूत्र प्लस कॅप्सूल के आश्चर्यजनक लाभ !
पितांबरी®
हेल्थकेअर डिवीजन
पितांबरी
हेल्थकेअर डिवीजन
आयुर्वेद में पहली बार
गोमूत्र प्लस
पाउडर कॅप्सूल्स
त्रिफला युक्त
१०x१० कॅप्सूल्स | जी.एम.पी. प्रमाणित
Product of India
गोमूत्र प्लस कॅप्सूल = त्रिफला (आंवला + बहेड़ा + हरीतकी) + गोमूत्र
=
गोमूत्र प्लस के लाभ
• कब्ज, हृदयरोग, मधुमेह जैसी बीमारियों में लाभदायक
• शरीर डिटॉक्स करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, वजन को नियंत्रित रखता है
• कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में फायदेमंद
• अनचाही गंध और स्वाद नही
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Contact: 9322971635, CRM: 022-6703 5564 / 5699,
Toll Free: 18001031299 | CIN: U52291MH1989PTC051314 | Shop Online: www.pitambari.com/shop

अनुक्रमणिका

कम आयु में मानसिक रोगी बनते युवा	डॉ. रामेश्वर मिश्र	04
परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों में तनाव	डॉ. कृष्णा नंद पांडेय	06
ऑनलाइन गेम से लॉगआउट होती जिंदगी	डॉ. मोनिका शर्मा	08
प्रेम की पश्चिमी पैकेजिंग	शिवा पंचकरण	11
जेब खाली पर लोन रेडी	दीपक कुमार द्विवेदी	13
देश में ऑरेंज इकॉनमी का दौर शुरू	राघव झा	15
टी-20 वर्ल्ड कप एक दृष्टि में...	राजीव रोहित	18
रेयर अर्थ मेटल पर चीन का एकाधिकार!	डॉ. हिमांशु थपलियाल	19
प्रदूषण की अजगरी बांहों में...	योगेश कुमार गोयल	21
गड़बड़ाता वैश्विक आर्थिक स्वास्थ्य का थर्मामीटर	डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	22
घर वापसी में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका	डॉ. नीतू गोस्वामी	23
दिल्ली की सड़कों पर सरपट दौड़ेगी 'भारत टैक्सी'	संकलन	25
प्रकृति की गोद में राष्ट्र की पहचान	संकलन	27
बिछिया और स्त्री स्वास्थ्य	संकलन	28
समाचार	हिंदी विवेक	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

स्वास्थ्य

डॉ. रामेश्वर मिश्र

कम आयु में मानसिक रोगी बनते युवा

युवाओं का कम आयु में मानसिक रोगी बनना एक चेतावनी है कि हमारी विकास की दौड़ में कहीं न कहीं मनुष्य का मन पीछे छूट गया है। यदि समय रहते इस समस्या को गम्भीरता से नहीं लिया गया तो इसका प्रभाव केवल युवाओं तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के भविष्य को प्रभावित करेगा।

आज के समय में यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक और चिंताजनक हो गया है क्योंकि युवा कम आयु में मानसिक रोगी बन रहे हैं। जिस आयु को ऊर्जा, सपनों और सम्भावनाओं का समय माना जाता था, उसी आयु में अवसाद, चिंता, अनिद्रा, आत्मग्लानि, अकेलापन और यहां तक कि आत्महत्या जैसे विचार युवाओं को घेर रहे हैं। यह समस्या केवल व्यक्तिगत कमजोरी नहीं है बल्कि समाज, व्यवस्था और बदलती जीवन-शैली का संयुक्त परिणाम है।

हाल ही में 2024-2025 के दौरान प्रकाशित कई रिपोर्टों में यह सामने आया है कि भारत में मानसिक रोगियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और इनमें सबसे बड़ा हिस्सा 15 से 35 वर्ष के युवाओं का है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद से जुड़े अध्ययनों के अनुसार लगभग आधे मानसिक विकारों की शुरुआत किशोरावस्था में ही हो जाती है, लेकिन पहचान और इलाज देर से होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट भी बताती है कि हर 7 में से एक किशोर किसी न किसी मानसिक समस्या से जूझ रहा है। यह आंकड़े केवल संख्या नहीं हैं बल्कि उन युवाओं की मौन पीड़ा का संकेत हैं, जो बाहर से सामान्य दिखते हैं, लेकिन भीतर से टूट रहे होते हैं।

इस स्थिति का सबसे बड़ा कारण बढ़ता हुआ शैक्षणिक और करियर दबाव है। आज

का युवा बचपन से ही प्रतियोगिता में धकेल दिया जाता है। अच्छे अंक, प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश, बेहतर पैकेज वाली नौकरी और सामाजिक प्रतिष्ठा इन सबकी अपेक्षाएं युवाओं के कंधों पर बोझ बन जाती हैं। असफलता का डर इतना गहरा हो गया है कि छोटी-सी असफलता भी युवाओं को आत्महीनता की ओर ले जाती है। हाल के समाचारों में कोचिंग संस्थानों और परीक्षा-दबाव से जुड़े आत्महत्या के मामलों ने पूरे देश को झकझोर दिया है। यह दर्शाता है कि हम सफलता को जीवन से बड़ा बना बैठे हैं, जबकि मानसिक संतुलन पीछे छूटता जा रहा है।

सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने भी युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है। हालिया आर्थिक सर्वेक्षण और स्वास्थ्य रिपोर्टों में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत में डिजिटल लत एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। इंस्टाग्राम, फेसबुक और अन्य प्लेटफॉर्म पर दिखने वाली परफेक्ट लाइफ युवाओं को निरंतर तुलना की मानसिकता में डाल देती है। वे अपने जीवन को दूसरों के सम्पादित और चमकदार जीवन से तौलने लगते हैं, जिससे हीन भावना, ईर्ष्या और अवसाद जन्म लेता है। ऑनलाइन ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग और लाइक्स-फॉलोअर्स की दौड़ मानसिक अस्थिरता को और बढ़ाती है।

परिवार और सामाजिक संरचना में आए बदलाव भी इस समस्या को गहरा कर रहे हैं। संयुक्त परिवारों का टूटना, माता-पिता का अत्यधिक व्यस्त होना और भावनात्मक संवाद की कमी युवाओं को अकेला अनुभव कराती है। कई युवा अपनी समस्याओं को साझा करने के लिए सुरक्षित स्थान नहीं पाते। ऊपर से मानसिक रोग को लेकर समाज में आज भी झिझक और कलंक बना हुआ है। 'लोग क्या कहेंगे' के डर से युवा अपनी परेशानी छुपा लेते हैं और जब तक सहायता लेते हैं, तब तक समस्या गम्भीर रूप ले चुकी होती है।

आर्थिक अनिश्चितता और बेरोजगारी भी युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर सीधा असर डाल रही है।

हालिया समाचारों में यह बार-बार सामने आया है कि उच्च शिक्षित युवाओं को भी स्थाई और संतोषजनक रोजगार नहीं मिल पा रहा है। महंगाई, भविष्य की असुरक्षा और सामाजिक तुलना युवाओं को निराशा और तनाव में डाल देती है। कई बार वे स्वयं को परिवार और समाज पर बोझ समझने लगते हैं, जो मानसिक रोगों की ओर एक आत्मघाती रास्ता खोल देता है। जीवन-शैली में आए बदलाव भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। नींद की कमी, अनियमित खान-पान, शारीरिक गतिविधि का अभाव और लगातार भागदौड़ भरी दिनचर्या शरीर के साथ-साथ मन को भी थका देती है। एक गम्भीर पहलू यह भी है कि स्कूल और कॉलेज स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा का अभाव है। युवाओं को यह सिखाया ही नहीं जाता कि तनाव से कैसे निपटना है, भावनाओं को कैसे समझना और व्यक्त करना है। परिणामस्वरूप वे अपनी भावनाओं को दबाते रहते हैं, जो आगे चलकर मानसिक रोग का रूप ले लेती हैं। हाल के वर्षों में कुछ राज्यों ने स्कूलों में काउंसलिंग और मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम शुरू किए हैं, लेकिन यह प्रयास अभी अपर्याप्त हैं। इन सबके बीच यह समझना आवश्यक है कि मानसिक रोग कोई कमजोरी या शर्म की बात नहीं है, यह

भी उतनी ही वास्तविक बीमारी है जितनी शारीरिक बीमारी।

हाल के समाचारों में कई सार्वजनिक व्यक्तियों और खिलाड़ियों ने अपने मानसिक संघर्षों के बारे में खुलकर बात की है, जिससे समाज में जागरूकता बढ़ी है। यह एक सकारात्मक संकेत है, लेकिन इसे जमीनी स्तर तक ले जाने की आवश्यकता है।

युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए समाज को सामूहिक रूप से सोच बदलनी होगी। माता-पिता को बच्चों की तुलना करने की बजाय उन्हें समझना होगा। शिक्षा व्यवस्था को केवल अंक और रैंक पर नहीं बल्कि मानसिक संतुलन और जीवन-कौशल पर भी ध्यान देना होगा। सोशल मीडिया के जिम्मेदार उपयोग और डिजिटल संतुलन को बढ़ावा देना होगा। सरकार और संस्थानों को मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और किफायती बनाना होगा ताकि युवा बिना डर और झिझक के सहायता ले सकें। ●●●

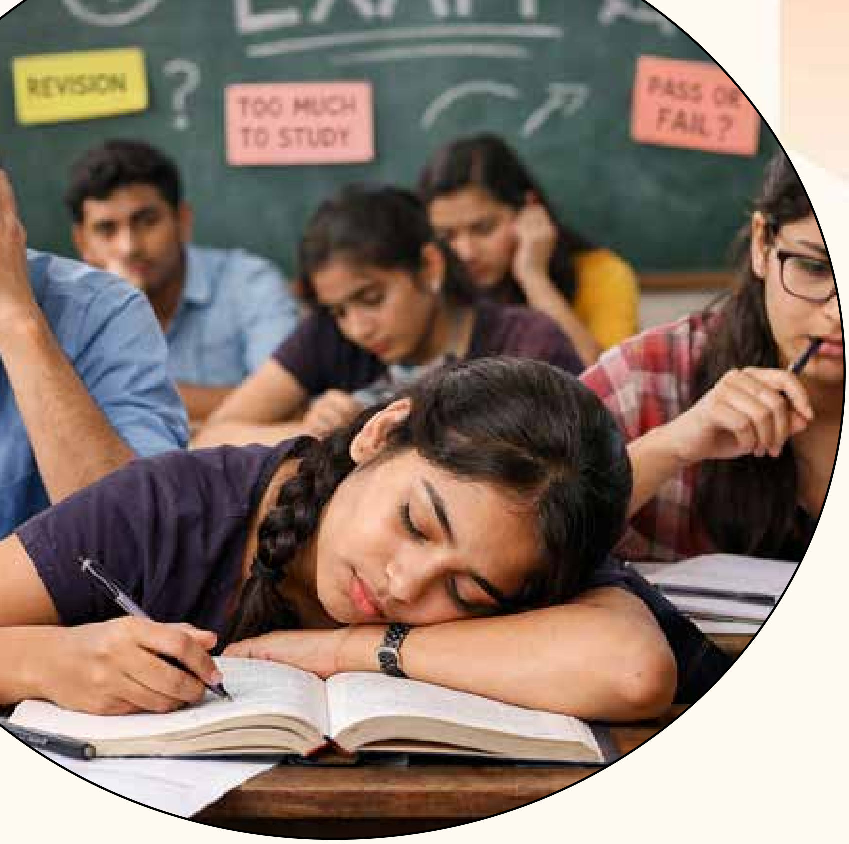

परीक्षा के दौरान परीक्षार्थियों में तनाव उनके जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। जिसका कारण परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, अभिभावकों की आशाओं पर खरा उतरना और दूसरे प्रतिभागियों से आगे निकलना आदि शामिल हैं, जो एंग्ज़ाइटी का प्रमुख कारण है।

डॉ. कृष्णा नंद पांडेय

परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों में तनाव

वर्तमान दौर में तनाव यानी दबाव प्रत्येक विद्यार्थी जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। पूर्व में किए गए कुछ अध्ययनों से पता चला है कि छात्रों को सफलता प्राप्त करने के लिए मध्यम दर्जे का दबाव लाभकारी होता है, परंतु इसकी चरम स्थिति जीवन को तहस-नहस कर सकती है। जिसके कई घातक परिणाम सामने आते हैं जिनमें व्यग्रता, चिंता, उत्कंठा यानी एंग्ज़ाइटी के साथ-साथ अवसाद और मनोवैज्ञानिक समस्याएं हैं।

परीक्षा नजदीक आने पर विद्यार्थियों को अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने का भारी दबाव झेलना पड़ता है। दबाव के तीन आयाम होते हैं। पहला, एक्यूट स्ट्रेस - जो अल्पकालिक होने के कारण अधिक प्रभावित नहीं करता, परंतु इसका प्रभाव अधिक अवधि तक बना रहने पर पीठ में दर्द, जबड़े में दर्द, सिर दर्द जैसी पेशी से जुड़ी समस्याएं उभरना सामान्य है। एक्यूट स्ट्रेस की स्थिति में एसिडिटी, डायरिया आदि जैसी समस्याएं भी उभर सकती हैं। दूसरा है एपिसोडिक एक्यूट स्ट्रेस - जो परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने और परिणाम के लिए उच्च मानक का निर्धारण करके ऊंची प्रत्याशाएं यानी अधिक आशाएं पाल लेने पर उभरता है। वांछित परिणाम नहीं मिलने की स्थिति में व्यक्ति में उच्च स्तर का दबाव पैदा हो सकता है। दबाव की तीसरी श्रेणी क्रॉनिक स्ट्रेस होती है जो लम्बी अवधि तक दुखी रहने, मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ बार-बार संघर्ष (अनावश्यक वाद-विवाद) करने जैसी स्थितियों के साथ क्यूट और क्रॉनिक स्ट्रेस के मिल जाने से उत्पन्न होती है।

परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों में उभरी दबाव की स्थिति में व्यक्ति की गतिविधि, प्रतिक्रिया और विशेष स्थिति में उसके द्वारा दी गई व्याख्या एंग्ज़ाइटी सिंड्रोम में बदल सकती है। यह स्थिति प्रतिकूल मनोवैज्ञानिक अवस्था के लिए एक गम्भीर चिंताजनक यानी भय पैदा करने वाली परिस्थिति होती है, जिस पर तत्काल ध्यान देने और उपाय ढूंढने की आवश्यकता होती है।

एंग्ज़ाइटी पैदा होने के पीछे कई कारक जिम्मेदार हो सकते हैं। अधिकांश विद्यार्थियों के अध्यापकों और माता-पिता की

आशाएं बच्चों पर दबाव डालती हैं कि वे अच्छे अंक ले आएं। यही सोच बच्चों के दोस्तों और परिवार के सदस्यों की भी होती हैं। प्रायः बच्चों में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की होड़ लगी रहती है ताकि वे भविष्य में भौतिक सुख-सुविधाएं अर्जित कर एक सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सकें। परीक्षा का डर भी बच्चों पर दबाव डालकर उन्हें तनावग्रस्त कर देता है। कुछ विद्यार्थियों को पढ़ाई में रुचि कम होती है, परंतु परीक्षा की उपयुक्त तैयारी नहीं होने और माता-पिता की उच्च अपेक्षाओं के चलते वे तनावग्रस्त हो जाते हैं।

परीक्षा के दौरान एंग्जाइटी

परीक्षा नजदीक आने पर विद्यार्थियों में एंग्ज़ाइटी एक आम समस्या के रूप में उभर कर आती है, जिससे उनका मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। यही एंग्ज़ाइटी उनकी पढ़ाई, परीक्षा तथा उनके सामाजिक सम्बंधों में समस्याएं खड़ी कर देती हैं।

एंग्जाइटी के कारण

परीक्षा आते ही विद्यार्थियों में अध्ययन का दबाव एंग्ज़ाइटी का एक प्रमुख कारण है। प्राइमरी और मिडिल स्तर के बच्चों को अपने अभिभावकों की इच्छानुसार क्लास में शीर्ष रैंक प्राप्त करने का दबाव बना रहता है। हाई स्कूल और इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों पर मनचाहे विषय में प्रवेश मिलने तथा मेडिकल, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, डिफेंस, जैसे आकर्षक संस्थानों में प्रवेश पाने का गहरा दबाव रहता है। परीक्षा में वांछित परिणाम प्राप्त करने की होड़ तथा माता-पिता की महत्वाकांक्षा जैसी स्थितियां विद्यार्थियों में एंग्ज़ाइटी का प्रमुख कारण बनती हैं। इनके अलावा बच्चों के परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों, पास-पड़ोस के लोगों का भी सामाजिक दबाव रहता है। कभी-कभी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याएं जैसे कि घरेलू समस्याएं, स्वास्थ्य समस्याएं, दुर्घटनाग्रस्त होने जैसी स्थितियां भी एंग्ज़ाइटी का कारण बन सकती हैं।

एंग्जाइटी के लक्षण

सालाना परीक्षाओं के दौरान विद्यार्थियों में मानसिक एवं भावनात्मक दबाव के करण तनाव और चिंता/व्यग्रता के लक्षण उभर सकते हैं। परीक्षा की एंग्ज़ाइटी के चलते उनमें सिर दर्द, पेट दर्द जैसे लक्षण उभर सकते हैं। परीक्षा समीप आते ही विद्यार्थी अपनी तैयारी का मूल्यांकन अवश्य करते हैं, कई विषयों का अध्ययन छूट जाने की स्थिति में उनमें गम्भीर भय पैदा हो जाता है कि कहीं उसी विषय अथवा चैप्टर से प्रश्न आ गए तो क्या होगा? ऐसी स्थिति में उनमें उदासी, गुस्सा जैसे भावनात्मक लक्षणों पर आधारित एंग्ज़ाइटी होना स्वभाविक हो जाता है।

एंग्जाइटी से बचाव

परीक्षा की एंग्ज़ाइटी लगभग सभी बच्चों में होती है जो एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। परीक्षा की एंग्ज़ाइटी से विद्यार्थियों को परीक्षा के दौरान एंग्ज़ाइटी से बचने के लिए उन्हें पूरे साल नियमित अध्ययन करते रहने की आदत डालना आवश्यक है। व्यायाम और योग करना उनमें एंग्ज़ाइटी को कम करने में सहायक हो सकता है। मेडिटेशन और ध्यान भी एंग्ज़ाइटी को दूर भगाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय भागीदारी से उनकी अध्ययन अवधि के बीच ब्रेक तो मिलेगा ही, उनके मन-मस्तिष्क में ताजगी का भी अनुभव होगा। हालांकि परीक्षा के दौरान अपनी दैनिक दिनचर्या में बदलाव लाकर परीक्षा के दबाव से बहुत सीमा तक बचा जा सकता है। अध्यापकों और माता-पिता को चाहिए कि बच्चों को सकारात्मक सोच विकसित करने को प्रोत्साहित करें। बच्चों को पढ़ाई के लिए एक निश्चित समय निर्धारित करना चाहिए और अपना ध्यान उन विषयों पर अधिक केंद्रित करें, जिन्हें अभी तक उपेक्षित रखा गया था। परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों की मानसिक सक्रियता बहुत अधिक बढ़ जाती है। अतः एक निश्चित अवधि के बाद पढ़ाई से ब्रेक लेना, उनके मस्तिष्क के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। माता-पिता द्वारा बच्चों की अध्ययन प्रणाली पर अनावश्यक हस्तक्षेप की जगह, उन्हें शांतिपूर्ण अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने के साथ-साथ उनके पोषण की उपयुक्त व्यवस्था भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। विद्यार्थियों की शारीरिक और बौद्धिक क्षमता अपने ही क्लास के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में भिन्न होती है। उनमें हीन भावना विकसित होने से बचाने के लिए उनकी अन्य विद्यार्थियों से तुलना नहीं की जानी चाहिए।

●●●

ऑनलाइन खेलों के भंवरजाल में फंसकर बच्चे कहीं आत्महत्या कर रहे हैं तो कहीं पैसे गंवा रहे हैं। कभी ब्लैकमेलिंग के शिकार बन जाते हैं तो कभी स्वयं अपराध की राह पकड़ लेते हैं। ऑनलाइन खेलों के जोखिम और स्मार्ट फोन की लत के दुखद परिणाम आए दिन सामने आते हैं।

डॉ. मोनिका शर्मा

सोशल मीडिया

ऑनलाइन गेम से लॉगआउट होती जिंदगी

गाजियाबाद में हाल ही में ऑनलाइन गेम कोरियन लवर के जाल में फंसकर तीन बहनों ने आत्महत्या कर ली। वास्तव में गाजियाबाद का यह मामला भी लड़कियों के वर्चुअल गेम की एडिक्ट होने भर का नहीं है। स्क्रीन की दुनिया में गुम रहने वाली तीनों बहनें मनोवैज्ञानिक मोर्चे पर भी बड़े भटकाव की शिकार थीं। तीनों नाबालिग लड़कियां कोरियन कल्चर से बेहद प्रभावित थीं। शादी भी किसी कोरियन लड़के से ही करने की इच्छा रखती थीं। कोरियन कल्चर के फेर में उनकी बदलती मनःस्थिति को देखकर ही उनसे स्मार्ट फोन ले लिया गया।

एक पेज के सुसाइड नोट में आत्महत्या का कदम उठाने के लिए तीनों बहनों ने मम्मी पापा से क्षमा मांगी है, साथ ही घर से मिली 8 पन्नों की डायरी में बच्चियों ने लिखा है कि वो कोरियन कल्चर, कोरियन पॉप, कोरियन मूवीज, शोज, संगीत और यूट्यूबर्स को बहुत ज्यादा पसंद करती थीं। वे कोरियन कल्चर को अपनाना चाहती थीं। कुछ समय पहले मध्य प्रदेश में ऑनलाइन गेमिंग में 40 हजार रुपए हारने पर 6वीं कक्षा में पढ़ रहे 13 साल के बच्चे ने आत्महत्या की थी। एक और मामले में फ्री फायर गेम की लत के शिकार 12 वर्षीय छात्र से पापा ने मोबाइल फोन छीना तो उसने फांसी लगा ली थी। मैनपुरी शहर में 10 साल के एक बच्चे ने कार्टून देखने के लिए मोबाइल न मिलने पर जान दे दी। हरियाणा के मामले में तो 5वीं कक्षा के एक बच्चे को मोबाइल से दूर करने पर उसने अपना हाथ ही चाकू से काट लिया था। बीते दिनों लखनऊ में भी ऑनलाइन गेम फ्री फायर मैक्स के चलते एक बच्चे ने सुसाइड किया था। अपराधियों ने उससे दोस्ती की और गेम में डायमंड्स और हथियार का लालच देकर फंसाया, फिर पैसे मांगे और उसे डराने-धमकाने लगे। पहले तो बच्चा पैसे देता रहा, फिर मानसिक दबाव और भय के चलते आत्महत्या कर ली। इन्हीं दिनों हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में एक टीनेजर ने ऑनलाइन गेम के अपने एक विदेशी साथी के बिछुड़ने की पीड़ा के चलते जीवन का साथ छोड़ दिया। विडम्बना है कि खेल भी ना केवल स्क्रीन की दीवार तक ही सिमट गए बल्कि बच्चों की दुनिया को भी समेट रहे हैं। कई ऑनलाइन गेम मन-मस्तिष्क को काबू करते हुए उनसे मनचाही हरकतें करवा रहे हैं। चैलेंज और आपराधिक चालबाजी का यह जाल बच्चों को मौत के मुंह तक ले जा रहा है।

व्यावहारिक रूप से जिन चीजों का बच्चों के जीवन में कोई स्थान ही नहीं होना चाहिए, वे नई पीढ़ी के जीने-मरने की परिस्थितियां बना रही हैं। स्मार्ट गैजेट्स के कारण बच्चे जिंदगी से ही लॉगआउट हो रहे हैं। ब्लू व्हेल जैसे गेम के कारण ही अब तक दुनियाभर में 250 से ज्यादा बच्चे आत्महत्या कर चुके हैं। हमारे देश में भी कई बच्चों ने ब्लू व्हेल खेल के कारण ही आत्मघाती कदम उठाया है। जिसके चलते केंद्र सरकार द्वारा आत्महत्या के लिए उकसाने वाले ब्लू व्हेल गेम पर रोक लगाते हुए प्रमुख सर्च इंजन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को यह गेम डाउनलोड करने के लिंक हटाने तक को कहा था। इसके अलावा कीकी चैलेंज, मोमो चैलेंज और पबजी जैसे ऑनलाइन गेम्स में मिले वर्चुअल चैलेंज भी बच्चों का जीवन छीनने के कारण बन चुके हैं। ऑनलाइन गेम में घर बैठे बच्चों की मनः स्थिति के भटकाव के पीछे कई कारण हैं। टीनेज बच्चों को

कभी डराकर तो कभी खेल के रोमांच के नाम पर ब्रेनवाश किया जाता है। एकबार वर्चुअल खेलों के आदी होने एक बाद बच्चों की मानसिकता बदल जाती है। अपनों से ज्यादा अनजान चेहरों या मशीनी प्रॉम्प्टस की बात मानने लगते हैं। खुद को कुछ विशेष अनुभव करने की फीलिंग आ जाती है। ऑनलाइन खेल के दौरान उनकी मनोवृत्ति में आए भटकाव का एक कारण अपनों की अनदेखी भी होती है। अधिकतर अभिभावक समय रहते नहीं चेतते हैं। इस मामले में भी तीनों बहनों का मोबाइल एडिक्शन हद से ज्यादा बढ़ने और स्कूल तक जाना बंद कर देने के बाद परिवार ने मोबाइल के प्रयोग पर रोक लगाई थी। स्पष्ट है कि एक ओर साइबर संसार की अनदेखी- अनजान दुनिया बच्चों की समझ छीनती है तो दूसरी ओर अपनों से सही समय पर मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। ऑनलाइन गेम्स के लती होने के बाद की गई सख्ती बच्चे नहीं झेल पाते और अतिवादी कदम उठा लेते हैं।

- **बच्चे के बदलते व्यवहार पर चेतें।**
- **पसंद की एक्टिविटीज की बजाय स्मार्ट फोन में खोया रहे।**
- **गेम न खेल पाने पर आक्रोश जताए या चुप्पी चुन ले।**
- **एकेडेमिक मोर्चे पर पिछड़ने लगे।**
- **अटेंशन स्पैन कम हो जाए।**
- **समाज या परिवार में मेलजोल में रुचि ना ले।**
- **किसी खास गेमिंग कैरेक्टर की तरह बर्ताव करे।**
- **घर के महंगे सामान या पैसे गायब होने लगे**
- **बच्चा डरा सहमा और अकेला रहने लगे।**

साइकोलॉजिकली बच्चे ऑनलाइन गेम या स्क्रीन के संसार की दूसरी गतिविधियों से इतना क्यों जुड़ जाते हैं कि किसी देश के कल्चर या ऑनलाइन खेल के जानलेवा चैलेंज को मानने लगता है?

अभिभावक रहें सजग

निःसंदेह, ऐसी घटनाएं ऑनलाइन गेम्स और आभासी संसार के बढ़ते दखल के प्रति सचेत करते हैं। विशेषकर अभिभावकों के लिए यह गम्भीरता से और गहराई से समझने का विषय बना गया है कि स्मार्ट गैजेट्स पर बच्चे मनोरंजन के नाम पर कैसे खेल खेल रहे हैं? गैजेट्स का प्रयोग किन गतिविधियों के लिए कर रहे हैं? जिसका सीधा सा अर्थ है कि पेरेंट्स को कई फ्रंटस पर सजग रहना होगा। सख्ती की बजाय उचित मार्गदर्शन से ही बच्चों को ऐसे एडिक्शन से निकाला जा सकता है। वास्तविक दुनिया में समय और स्नेह देकर ही उनका जीवन सहेजा जा सकता है, बस आवश्यकता है स्नेह व उचित मार्गदर्शन की। ●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

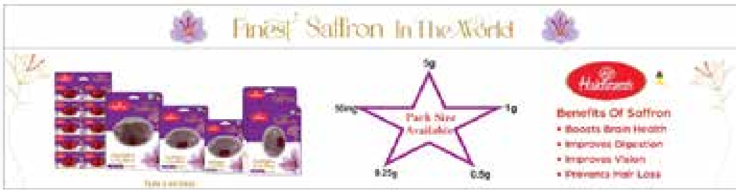

Haldiram's

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT ™

केसर तिलक

★दिव्यता ★ समृद्धि ★ शुभ भाग्य
★संपत्ति ★ कैरियर के अच्छे अवसर

अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।

तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*

ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*

केसर तिलक कैसे तैयार करें

कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।

*Data on file

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

प्रेम की पश्चिमी पैकेजिंग

पश्चिमी देशों में भी प्रेम अब व्यक्ति को आधार बना कर बाजार आधारित हो चुका है। जिस वैलेंटाइन डे को प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में समझा जाता है और इसे एक उत्सव की तरह मनाने का प्रयास किया जाता है वह वैलेंटाइन डे का दिन, उपहारों और अपेक्षाओं के तले दबा हुआ बाजारवाद का प्रतिबिम्ब मात्र है। यह बाजार का प्रदर्शन मात्र बन कर रह जाता है, जैसे किसी कॉर्पोरेट इवेंट में किए गए खर्चे के आधार पर प्रेम को माप कर उसकी कीमत तय होगी।

वर्तमान में वैलेंटाइन डे बाजारवाद के लिए मानवीय अनुभव की चीजों को बेचने योग्य एक उत्पाद के रूप में विकसित करता है। प्रेम मात्र एक इवेंट रह जाता है जिसमें प्रेम की भावना को प्रोडक्ट की भांति बेचा जाता है। ट्रांजेक्शन आधारित यह सम्बन्ध पूरा एक आर्थिकी चक्र बनाते हैं और युवा मन मस्तिष्क यह समझता है कि भावना का एक मूल्य है जिसकी कीमत बाजार तय करती है, जबकि आचरण-व्यवहार और समय बाजार के आगे सब गौण हो जाते हैं। तुरंत सुख की कामना से प्रेम एक बाजारी वस्तु बन जाता है और व्यक्ति उसका उपभोक्ता। अब उपभोक्ता के रूप में व्यक्ति, प्रेम में रहते हुए बस यही प्रश्न करता है कि मुझे क्या मिला? सरल शब्दों में अधिकार केंद्रित प्यार अब अपने कर्तव्य को भूल जाता है और केवल अपेक्षा आधारित रह जाता है। इस दृष्टि से देखने पर राधा-कृष्ण, मीरा, कबीर, सीता-राम, शिव-पार्वती का प्रेम समझ नहीं आ सकता क्योंकि वह प्रेम अध्यात्मिक है। इस दृष्टि से देखने वालों के लिए पद्मावती का जौहर, समझ से परे होता है।

पश्चिम की दृष्टि में लव या प्यार जो आकर्षण, कामना, मित्रता पर आधारित है- वह भारत की दृष्टि में स्पेकट्रम के एक रंग की अभिव्यक्ति मात्र है। वैलेंटाइन डे उस एक रंग के भी अंतर्गत एक सीमित रूप है जिसका स्थान भी रूपांतरित होकर बस एक कॉर्पोरेट उत्सव ने लिया हुआ है। प्रेम जो जीवन भर का अभ्यास है उसे वैलेंटाइन डे के नाम पर एक दिन में बांधने से प्रेम की एक संकीर्ण उपभोक्तावादी परिभाषा बनाने का प्रयास किया गया है। 1990 के दशक में जब उदारवाद भारत में लागू किया गया और उसके साथ ही टीवी के माध्यम से वैश्विकरण ने अपने पांव भारत में फैलाए और उसके माध्यम से यह कॉर्पोरेटिव प्रेम या वैलेंटाइन डे को भारत ने पश्चिम से आयात किया। युवाओं की एक बड़ी जनसंख्या होने के कारण एक बड़ा बाजार भारत में उपलब्ध था जिसमें प्यार के नाम पर बहुत सारी कम्पनियों ने अपने प्रोडक्ट को सिनेमा, साहित्य के माध्यम से घर-घर में पहुंचाया और उसे प्रेम के साथ जोड़ दिया। उदाहरण के लिए चॉकलेट डे, हग डे, किस डे, रोज डे, टेडी डे इत्यादि प्रेम अभिव्यक्त करने के प्रतीक हो गए। इन वस्तुओं को बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कीमत से तिगुने, चौगने कभी 10 गुने दाम पर बेचती हैं और भारतीय युवा बिना सोचे समझे इन्हें खरीदना और देना प्रेम समझ लेता है। इस कारण कुछ वर्षों में ही प्रेम करने का तरीका और

वैलेंटाइन डे

शिवा पंचकरण

वैलेंटाइन डे का बुखार युवाओं पर सर चढ़कर बोल रहा है। इस अवसर पर प्रेमी जोड़े अपने पार्टनर को रिझाने के लिए तरह-तरह के उपहार देते हैं और यहां तक कि वैलेंटाइन सप्ताह मनाते हैं, जिससे पश्चिमी देशों के वैश्विक बाजार को बढ़ावा मिलता है।

उसे प्रस्तुत करने का दिन वैलेंटाइन डे हो गया।

हालांकि असल में यह दिन अमेरिका और चीन जैसे देशों के लिए मुनाफा कमाने के लिए एक अवसर बन जाता है। प्रेम से जोड़ कर बड़ी मल्टिनेशनल कम्पनियां बड़ा मुनाफा कमाती हैं जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था भी प्रभावित होती है। भौतिकवाद, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, जैसे कितने ही वादों से भरी हुई एक संस्कृति है जो केवल त्वरित निर्णयों, तत्कालीन लाभ और व्यक्तिगत लाभ के लिए सोचती है। वैलेंटाइन डे के आसपास के समय में नाबालिगों में प्री-मैरिटल सेक्स बढ़ता है, गर्भनिरोधक गोली व निरोध की खपत 10 गुना उछलती है और अनचाहे गर्भधारण व गर्भपात के मामले सामने आते हैं। अमेरिका जैसे बड़े देशों की परिवार व्यवस्था और युवा की स्थिति यह साफ कर देती है कि इन चीजों के परिणाम कहां तक जा सकते हैं। भारत में जो केवल शुरू हुआ है पश्चिम उसके परिणाम भुगतना शुरू कर चुका है। इसलिए समझदारी दूसरों की गलती दोहराने में नहीं अपितु उससे सीखने में है। प्रेम के बारे में जानकारी और भारतीय दृष्टि का बोध युवाओं में पहुंचाना आवश्यक है ताकि एक बेहतर भविष्य बनाया जा सके। वैलेंटाइस का एक पक्ष यह भी है कि छोटी आयु में दिखावे और तथाकथित प्रेम के चककर में पड़ कर युवा अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों से भटक जाते हैं। डेट्स और मैसेजिंग के कारण स्टडी टाइम घटता है और ब्रेकअप या झगड़े से स्ट्रेस बढ़ता है, जो एकेडमिक परफॉर्मेंस घटाता है। ऐसे अवसरों पर प्रेम की उत्तेजना डोपामाइन जैसी हार्मोन्स को सक्रिय करती है, जो ध्यान केंद्रित करने और सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि रोमांटिक डिस्ट्रैक्शन छात्रों के जीपीए को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है क्योंकि भावनात्मक व्यस्तता समय प्रबंधन बिगाड़ती है। साथ ही रोमांटिक लव ब्रेन के रिवार्ड सिस्टम को डोपामाइन से सक्रिय करता है, जो नशे जैसा क्रेविंग पैदा करता है और पढ़ाई पर फोकस कम करता है। यह सेरोटोनिन को घटाता है, जिससे ओसीडी जैसी चिंता बढ़ती है और एकाग्रता भंग होती है।

•••

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

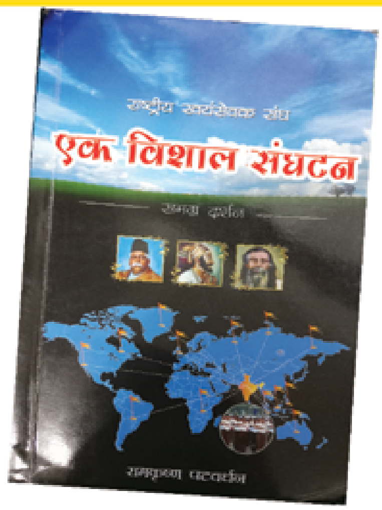

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

दीपक कुमार द्विवेदी

पिछले कुछ वर्षों में युवाओं के बीच ट्रैवल लोन का चलन तेजी से बढ़ा है। पहले जो यात्रा सोच-समझ, तैयारी और प्रतीक्षा से जुड़ी होती थी, वह अब कहीं अधिक आसान हो गई है। कुछ क्लिक, थोड़ी औपचारिकता और यात्रा शुरू।

जेब खाली पर लोन रेडी

एक समय था जब घूमने का मतलब था पहले साधन जुटाना, कुछ बचत करना और फिर अवसर मिलने पर निकल पड़ना। आज वही यात्रा अधिकांश ऋण के सहारे पूरी की जा रही है। युवाओं में यात्रा को लेकर जो उत्साह बढ़ा है, उसके पीछे एक नहीं, कई कारण हैं। आज की पीढ़ी दुनिया को केवल पुस्तकों या सुनी-सुनाई बातों से नहीं जानती। वैश्वीकरण और डिजिटल माध्यमों ने पूरी दुनिया को मोबाइल स्क्रीन पर ला दिया है। सोशल मीडिया पर यात्रा अब केवल घूमने का अनुभव नहीं रही बल्कि अपनी पहचान दिखाने और सामाजिक स्वीकार्यता पाने का एक तरीका बन गई है। यह प्रवृत्ति केवल भारत तक सीमित नहीं है बल्कि अमेरिका, यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया में भी युवा इसी मानसिकता के साथ यात्रा को जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानने लगे हैं।

भारत में कोविड-19 के बाद यह रुझान और स्पष्ट हुआ। लम्बे लॉकडाउन, रुकी हुई जिंदगी और भविष्य की अनिश्चितता ने युवाओं के भीतर यह भाव पैदा कर दिया कि जीवन को टालकर नहीं जिया जा सकता। जो देखना-समझना है, वह अभी करना है। इसी सोच ने यात्रा

को प्राथमिकता दी, कभी अपनी बचत से तो कई बार अपनी सामर्थ्य से आगे बढ़कर। यहीं से 'अभी घूमो, बाद में चुकाओ' जैसी मानसिकता आकार लेती है। सुनने में यह सोच बहुत लुभावनी लगती है। आज का आनंद, कल की चिंता, लेकिन भारत जैसे देश में जहां अधिकांश युवाओं की आय स्थिर नहीं है, यह सोच भीतर ही भीतर भारी जोखिम समेटे हुए हैं। भावनाओं के स्तर पर यह स्वतंत्रता और आत्मसंतोष का भ्रम देती है, पर आर्थिक धरातल पर यह असुरक्षा की नींव बनती जाती है। आज की वास्तविकता यह है कि देश का बड़ा युवा वर्ग स्थाई नौकरियों में नहीं हैं। निजी क्षेत्र, कॉन्ट्रैक्ट आधारित काम, गिग इकॉनमी और स्टार्टअप यही आज के रोजगार के प्रमुख क्षेत्र हैं। यहां न आय निश्चित है, न भविष्य सुरक्षित। महीने अच्छे भी हो सकते हैं और अचानक खाली भी। इसके बाद भी यात्रा को टालने की बजाय ऋण को एक आसान रास्ते के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।

असल में ट्रैवल लोन कोई अलग श्रेणी नहीं होता। वह साधारण पर्सनल लोन ही होता है, अंतर बस इतना है कि इससे कोई सम्पत्ति नहीं बनती, कोई दीर्घकालिक आधार तैयार नहीं होता। ब्याज दरें भी मामूली नहीं होतीं। यदि कोई युवा 2 लाख रुपए का ट्रैवल लोन लेता है तो हर महीने लगभग 10 हजार रुपए की ईएमआई उसकी आय से कटने लगती है। दो से ढ़ाई वर्षों में वह कुल मिलाकर 40-50 हजार रुपए अतिरिक्त चुका देता है और बदले में उसके पास यादें तो होती हैं, लेकिन कोई आर्थिक सुरक्षा नहीं। यहीं ऋण का असली स्वरूप सामने आता है। यह निवेश नहीं है, यह आवश्यकता भी नहीं है। यह वास्तव में भविष्य की आय को वर्तमान के आनंद के बदले गिरवी रखने जैसा है।

आज का उपभोक्तावादी और भौतिकतावादी सोच उस संतुलन से बिल्कुल उलटी दिशा में चलता दिखाई देता है, जिसकी बात सनातन परम्परा करती रही है। यह सोच कोई नई नहीं है। इसका आधार बहुत पहले से रहा है।

चार्वाक दर्शन में यही दृष्टि साफ दिखाई देती है, जहां जीवन को केवल वर्तमान सुख तक सीमित मान लिया गया था। चार्वाक की उक्ति 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' इसी मानसिकता को व्यक्त करती है। भाव यही था कि भविष्य का कोई विश्वास नहीं, इसलिए जो सुख आज उपलब्ध है, उसे अभी भोग लिया जाए, चाहे उसके लिए उधार ही क्यों न लेना पड़े। आज का ट्रैवल लोन उसी सोच का नया रूप है। अंतर बस इतना है कि अब यह विचार दर्शन की पुस्तकों में नहीं बल्कि मोबाइल ऐप्स, ऑफर और विज्ञापनों में सामने आता है। संदेश सीधा और आकर्षक होता है कल का क्या पता, आज घूमो, आज जियो। यह सोच कुछ समय के लिए अच्छा अनुभव कराती है, लेकिन उसके साथ एक अनदेखा दबाव भी जोड़ देती है, जिसका अनुभव धीरे-धीरे होता है। डिजिटल लोन प्लेटफॉर्म ने इस रास्ते को और आसान बना दिया है। अब न बैंक जाने की आवश्यकता है, न लम्बी प्रक्रिया की। कुछ जानकारी भरिए और कुछ ही मिनटों में लोन स्वीकार। ईएमआई इस तरह दिखाई जाती है कि वह मामूली लगे। महीने के 9-10 हजार रुपए उस समय भारी नहीं लगते, विशेषकर जब सामने यात्रा का उत्साह हो। किसी महीने यदि आय गड़बड़ा जाए (जो निजी नौकरी, कॉन्ट्रैक्ट या गिग काम में आम बात है) तो पहली ईएमआई चूकते ही परेशानी शुरू हो जाती है। क्रेडिट स्कोर गिरने लगता है। उस समय कदाचित् अंतर अनुभव न हो, लेकिन बाद में जब घर खरीदने, पढ़ाई करने या कोई व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण चाहिए होता है, तब रास्ते कठिन हो जाते हैं। तब समझ आता है कि यात्रा के लिए लिया गया एक आसान निर्णय भविष्य की सम्भावनाओं को भी सीमित कर सकता है। यहीं चार्वाकीय भोग-दृष्टि और सनातन संतुलन के बीच का अंतर साफ दिखाई देता है। एक सोच कहती है जो है, अभी भोग लो। दूसरी सोच कहती है आज का आनंद ठीक है, लेकिन भविष्य की जमीन मजबूत रहनी चाहिए। यही अंतर अंततः जीवन को स्थिर बनाता है या अस्थिर। घूमना कोई गलत बात नहीं है। बाहर निकलने से आदमी बहुत कुछ देखता है, समझता है और कई बार स्वयं को भी नए सिरे से पहचानता है। परेशानी यात्रा से नहीं, उस तरीके से शुरू होती है जिससे यात्रा की जाती है। जब कमाई खुद पक्की न हो, तब उधार लेकर की गई यात्रा अधिकतर बाद में भारी लगने लगता है।

उत्साह होना स्वाभाविक है। इच्छा भी होती है, लेकिन प्रत्येक इच्छा तुरंत पूरी कर लेना ही समझदारी नहीं होती। हमारे यहां हमेशा यह बात मानी गई कि इच्छा हो, पर वह साधनों से आगे न निकल जाए। खर्च हो, पर अपनी हैसियत में रहे। जब यह बात बनी रहती है तो जीवन अपने ढंग से चलता रहता है। जब यह टूटती है तो परेशानियां अपने-आप आने लगती हैं। उधार का भोग अधिकतर बाद में कीमत वसूलता है। इसके उलट बचत कोई त्याग नहीं है। वह बस यह विश्वास है कि आगे का समय पूरी तरह हाथ से फिसल न जाए। यदि यह समझ साथ रहे तो घूमना भी होगा, आनंद भी मिलेगा और लौटने के बाद जीवन फिर से सम्भालनी नहीं पड़ेगी। ●●●

देश में ऑरेंज इकॉनमी का दौर शुरू

ऑरेंज इकोनॉमी, जिसे रचनात्मक अर्थव्यवस्था के नाम से भी जाना जाता है, उन आर्थिक गतिविधियों को संदर्भित करती है जो रचनात्मकता, संस्कृति और बौद्धिक पूंजी पर केंद्रित होती हैं। इसमें वे उद्योग शामिल हैं, जो विचारों और सांस्कृतिक विरासत को वाणिज्यिक मूल्य वाले सामान और सेवाओं में परिवर्तित करते हैं। ऑरेंज इकॉनमी या क्रिएटिव इकॉनमी को अब उसी स्तर की प्राथमिकता और महत्व दिया जा रहा है जैसा 1990 के दशक में आईटी बूम के दौरान देखने को मिला था। यह कला, संस्कृति, डिजाइन और डिजिटल कंटेंट जैसे रचनात्मक क्षेत्रों पर आधारित है। इस तरह की अर्थव्यवस्था आइडिया, क्रिएटिविटी और टैलेंट पर जमी होती है।

संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास (यूएनसीटीएडी) की क्रिएटिव इकॉनमी आउटलुक रिपोर्ट 2024 के अनुसार क्रिएटिव या ऑरेंज इकॉनमी आज दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में शामिल है। इस सेक्टर से प्रत्येक साल 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का वैश्विक कारोबार हो रहा है। बढ़ती सम्भावनाओं को देखते हुए कोलम्बिया, जापान और फ्रांस जैसे कई देशों में क्रिएटिव इंडस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए विशेष नीतियों, टैक्स इंसेंटिव और सरकारी फंडिंग की व्यवस्था बहुत पहले से हैं। पहली बार भारत के बजट में ऑरेंज इकॉनमी की चर्चा की गई है, लेकिन इसे पिछले कुछ समय से लगातार बढ़ावा मिल रहा है।

राघव झा

बदलते दौर में आइडिया, क्रिएटिविटी और टैलेंट भी एक बड़ी आर्थिक ताकत बन चुके हैं। अब तक कि बजट में यह पहली बार है जब सरकार ने इतनी साफ तौर पर ऑरेंज इकोनॉमी यानी क्रिएटिव इकोनॉमी को मुख्यधारा में लाने का संकेत दिया है।

साल 2025 में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने मुंबई में आयोजित वेव (वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंड एंटरटेनमेंट) समिट में हिस्सा लिया था। इस सम्मेलन में 90 से अधिक देशों के 10 हजार से अधिक प्रतिनिधि, 300 कम्पनियां, 1000 से ज्यादा कंटेंट क्रिएटर और 350 से अधिक स्टार्टअप उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रधान मंत्री ने कहा, भारत फिल्म, डिजिटल कंटेंट, गेमिंग, फैशन, संगीत और लाइव मनोरंजन का वैश्विक हब बनता जा रहा है और आने वाले सालों में क्रिएटिव सेक्टर का जीडीपी में हिस्सा भी बढ़ेगा। क्रिएटर पारम्परिक तरीकों से आगे बढ़ें और भारतीय कहानियों को विश्व स्तर पर पेश करें। भारत के ज्यादातर कंटेंट क्रिएटर इंस्टाग्राम, यूट्यूब और गूगल जैसे विदेशी प्लेटफॉर्म पर निर्भर हैं। देश में फिलहाल अपना कोई बड़ा प्लेटफॉर्म नहीं है जो कंटेंट क्रिएटर

के लिए ऑडियंस, ऑप्टिमाइजेशन और कमाई के अवसर पूरी तरह से दे सके। इसलिए ऑरेंज इकॉनमी को भारत में मोनेटाइज करना बेहद आवश्यक बताया जा रहा है।

वित्त मंत्री सीतारमण द्वारा 2026 के केंद्रीय बजट में ऑरेंज इकोनॉमी पर दिया गया विशेष ध्यान भारत के व्यापक आर्थिक और सांस्कृतिक लक्ष्यों के साथ इसके तालमेल को दर्शाता है। मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र, जो ऑरेंज इकोनॉमी का एक प्रमुख हिस्सा है, भारत की सेवा अर्थव्यवस्था का भी एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। वर्ष 2024 में इसका अनुमानित मूल्य 2.5 ट्रिलियन था। इसकी तीव्र वृद्धि का लाभ उठाने के लिए बजट में वित्त तक पहुंच में सुधार और बौद्धिक सम्पदा (आईपी) अधिकारों को मजबूत करने जैसे उपाय शामिल किए गए हैं। भारत के एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स क्षेत्र में रोजगार बढ़ाने की अपार क्षमता है, विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं के लिए। बजट में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि इस क्षेत्र में 2030 तक लगभग 20 लाख पेशेवरों की आवश्यकता होगी। ऑरेंज इकोनॉमी की क्षमता को साकार करने के लिए बजट में 15,000 माध्यमिक विद्यालयों और 500 कॉलेजों में कंटेंट क्रिएटर लैब स्थापित करने का प्रस्ताव रखा गया है।

मुम्बई स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजीज के सहयोग से शुरू की गई यह पहल युवाओं के लिए विशिष्ट कौशल विकसित करने और नए करियर के अवसर खोलने में सहायक होगी। भारतीय फिल्मों, संगीत और हस्तशिल्प जैसे सांस्कृतिक निर्यात को बढ़ावा देने से भारत का वैश्विक प्रभाव मजबूत होता है। एक समृद्ध रचनात्मक क्षेत्र देश की सॉफ्ट पावर को बढ़ाता है और इससे सांस्कृतिक उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय मांग में वृद्धि हो सकती है, जिससे व्यापार और राजनयिक सम्बंधों को समर्थन मिलता है।

ऑरेंज इकोनॉमी भारत के आर्थिक विविधीकरण और सांस्कृतिक प्रक्षेपण के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है। बजट 2026 में वित्त मंत्री का जोर इस क्षेत्र को औपचारिक बनाने, इसकी संरचनात्मक चुनौतियों का समाधान करने और इसके विकास को अधिकतम करने के लिए एक स्पष्ट नीतिगत दिशा का संकेत देता है। ऑरेंज इकोनॉमी युवाओं और महिलाओं के लिए रोजगार सृजित करती है, सांस्कृतिक निर्यात के माध्यम से राजस्व बढ़ाती है, सॉफ्ट पावर को मजबूत करती है और पर्यटन को आकर्षित करती है। ●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

भारत और श्रीलंका की सह मेजबानी में टी-20 विश्व कप 2026 का आयोजन 7 फरवरी से आरम्भ हुआ जो आगामी 8 मार्च तक चलेगा। ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि पाकिस्तान 15 फरवरी को होनेवाले लीग मैच में भारत के खिलाफ नहीं खेलेगा।

टी-20 वर्ल्ड कप एक दृष्टि में...

टेस्ट क्रिकेट का प्रारूप पांच दिनों तक खिलाड़ी के कौशल, मानसिक सहनशक्ति और धैर्य की परीक्षा लेता है। क्रिकेट के जानकार टेस्ट मैचों को पसंद करते हैं, लेकिन एक दिवसीय क्रिकेट, यानी पचास ओवर के मैच के प्रारूप ने इस खेल में अलग रंग भर दिया था। रंगीन जर्सी पहने खिलाड़ियों की तस्वीरें दुनिया भर के टेलीविजन पर दिखाई देने लगीं और प्रसारण के जरिए क्रिकेट में पैसा आने लगा। एक दिवसीय क्रिकेट के लगातार आयोजनों के बाद भी वर्तमान में यह स्वीकार करने से किसी को कोई परहेज नहीं होना चाहिए कि निर्विवाद रूप से वर्तमान क्रिकेट युग में का सबसे बड़ा आकर्षण टी-20 का प्रारूप है। वर्ष 2007 में इसके पहले विश्व कप का आयोजन हुआ। कहना न होगा कि इस आयोजन के बाद इसकी लोकप्रियता में चार चांद लगने की शुरुआत लगातार जो हुई वो आज तक बिना किसी भी प्रकार के बाधा के जारी है। इस क्रम में भारत और श्रीलंका की सह मेजबानी में इस वर्ष टी-20 विश्व कप का आयोजन 7 फरवरी से आरम्भ हो रहा है जो 8 मार्च तक चलेगा।

यह भी सच है कि एशियाई देशों के आपसी कटु राजनीतिक सम्बंधों के कारण वर्तमान खेल परिदृश्य में ऐसी कोई भी वैश्विक अथवा एशियाई टूर्नामेंट आयोजित नहीं हुई है जो मुख्यत: राजनीतिक विवाद से ग्रस्त नहीं रही हो। क्रिकेट खेलनेवाले राष्ट्रों के आपसी जटिल राजनीतिक सम्बंधों ने इस खेल की चमक फीकी करने में कोई कसर नहीं छोड़ती है। यह भी एक सच है कि अधिकतर एशियाई देशों यथा भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश के बीच त्रिकोणीय परिस्थिति जनक विषम राजनीतिक सम्बंध ही इस खेल को अधिकांश विवादग्रस्त बना देती है। इस बार भी कुछ ऐसा ही हुआ है। आईपीएल से बांग्लादेश के खिलाड़ी के निष्कासन के बाद बांग्लादेश ने आंखे तरेरी तो आश्चर्यजनक रूप से बहुत जल्दी पाकिस्तान भी उनके खेमे में खुलकर आ गई है। दरअसल पाकिस्तान को कोई ऐसा बहाना चाहिए था जिससे उसे भारत के खिलाफ खेलना न पड़े। हाथ न मिलाना और नकवी के हाथों से विजेता ट्रॉफी न लेना इसके मूलभूत कारणों में हो सकता है। पाकिस्तान के पूर्व खिलाड़ी भी अपने बोर्ड के पक्ष में हैं। भारत सरकार को तो कोई आपत्ति नहीं है। हमारे निर्भीक खिलाड़ी पूरी तरह किसी भी देश का सामना करने के लिए तैयार हैं। इन देशों में पाकिस्तान भी शामिल है। अब पाकिस्तान अंतिम समय तक निर्णय बदल ले तो कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि इन मैचों से आयोजक क्रिकेट बोर्ड की आर्थिक स्वास्थ पर भी असर होता है। अब देखना यह है कि आईसीसी और दूसरा क्या कदम उठाता है? बांग्लादेश को तो औकात बता दिया गया है। अब पाकिस्तान की बारी है। उसे भी बाहर का रास्ता दिखाना चाहिए। एक तो आईसीसी पहले उनकी यह शर्त मानकर चल रही है कि उनके और भारत के बीच खेले जानेवाले मैच तीसरे स्थान पर आयोजित किए जाएं। अब उनका यह निर्णय कि वो इस विश्व कप में 15 फरवरी को होनेवाले लीग मैच में भारत के खिलाफ नहीं खेलेगी। यह स्वागत योग्य नहीं है और क्रिकेट जैसे खेल के लिए शुभ संकेत भी है। राजनीतिक कटु सम्बंध के एवज में अपने देश के नागरिकों के जान गंवाने की भावना से आहत हमारे खिलाड़ियों ने भले ही हाथ न मिलाए हों मगर बल्ले और गेंद के संघर्ष से नहीं डरते हैं। यह बात आईसीसी अच्छी तरह जानती है। वो अगर पाकिस्तान को बैन कर दे तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। •••

राजीव रोहित

रेयर अर्थ मेटल पर चीन का एकाधिकार!

वर्चस्व

डॉ. हिमांशु थपलियाल

ट्रम्प के टैरिफ वार के बाद चीन ने रेयर अर्थ मेटल्स के निर्यात पर प्रतिबंध लगाकर एकाधिकार कर लिया है। विदित हो कि रेयर अर्थ मेटल्स का प्रयोग लड़ाकू विमान, रॉकेट, मिसाइल गाइडेड सिस्टम, बुलेट ट्रेन, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण एवं इलेक्ट्रिक कारें बनाने में किया जाता है।

पिछले कुछ वर्षों से लगातार वैश्विक स्तर पर रेयर अर्थ मिनरल्स, रेयर अर्थ मेटल्स और क्रिटिकल मिनरल्स जैसे शब्द लगातार सुर्खियों में रहे हैं। हाल ही में यह शब्दावली एक बार फिर तब चर्चा में आई जब ट्रम्प द्वारा छेड़े गए टैरिफ वार के बाद चीन ने रेयर अर्थ मेटल्स के निर्यात पर प्रतिबंध लगाकर अमेरिकी रक्षा और प्रौद्योगिकी आपूर्ति को प्रभावित कर दिया। चीन भारी दुर्लभ धातुओं (रेयर अर्थ मेटल्स) के प्रसंस्करण में दुनिया की 90% से अधिक हिस्सेदारी रखता है। इस प्रतिबंध से वैश्विक स्तर पर अत्याधुनिक निर्माण और रक्षा क्षेत्र के लिए आवश्यक सेमीकंडक्टर और चुम्बकों की आपूर्ति में बाधा आ सकती है। अक्तूबर 2025 में चीन द्वारा रेयर अर्थ मेटल्स के निर्यात पर नियंत्रण को सख्त कर दिया है जिस कारण विदेशी कम्पनियों को इस सामग्री के अंतिम उपयोग की जानकारी देना अनिवार्य हो गया है। इस कारण वैश्विक स्तर पर रेयर अर्थ मेटल्स भी आर्थिक, रक्षा और औद्योगिक दृष्टि अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। अब एक ओर यह पेट्रोलियम की तरह वैश्विक राजनीतिक दबाव का माध्यम सा बनता दिख रहा है जिस पर चीन का एक तरह से एकाधिकार प्रतीत होता है, वहीं दूसरी ओर अमेरिका और अन्य देश अपने लिए रेयर अर्थ मेटल्स की एक सुरक्षित सप्लाई चेन का विकल्प खोज रहे हैं।

वास्तव में ये प्रकृति में ताम्बे से अधिक मात्रा में हैं। ये दुर्लभ इसलिए नहीं कि ये सब जगह नहीं होते बल्कि इसलिए दुर्लभ हैं क्योंकि ये बहुत कम मात्रा में सभी जगह फैले हुए हैं जिस कारण इन्हें खनिज रूप में भूमि से निकालना, फिर उसका शोधन करके धातु प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यधिक जटिल, खर्चीली एवं अधिक समय अवधि लेने वाली है। सम्पूर्ण विश्व के भीतर आज तकनीकी विकास का दौर चल रहा है जहां पर प्रत्येक क्षेत्र में रेयर अर्थ मेटल्स से बनी चीजों का प्रयोग होता है।

भारत को भी 2005 की तुलना में 2030 तक अपनी जीडीपी में मानव जनित कार्बन उत्सर्जन को 45% तक कम करना है जिसके लिए भारत को जीवाश्म ईंधन से प्राप्त ऊर्जा को 50% तक कम करना होगा और उसके स्थान पर वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोतों को बढ़ावा देना होगा और 2070 तक कार्बन उत्सर्जन में 0% का लक्ष्य पूर्ण करना है।

इन सभी लक्ष्यों को पूर्ण करने के लिए भारत को ग्रीन एनर्जी में तकनीकी विकास हेतु रेयर अर्थ मेटल्स की अत्यधिक आवश्यकता है। जैसे कि सोलर पैनल्स में लगने वाले पीवी

सेल, पवन ऊर्जा के लिए उपयोग होने वाली टरबाइन में परमानेंट मैग्नेट बनाने के लिए, उच्च स्तरीय स्टोरेज करने वाली लिथियम आयन बैटरी जैसी महत्वपूर्ण तकनीक के लिए रेयर अर्थ मेटल्स का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार समझा जा सकता है कि ग्रीन एनर्जी के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारत समेत विश्व के सभी देशों को आज इन रेयर अर्थ मिनरल्स की अत्यधिक आवश्यकता है।

आज रेयर अर्थ खनिज के मामले में चीन के पास दुनिया का 37% भंडार उपलब्ध है। खनन के मामले में रेयर अर्थ मिनरल का 70% खनन चीन के द्वारा किया जाता है और इनका प्रसंस्करण और परिष्कृत कर रेयर अर्थ मेटल प्राप्त करने के मामले में चीन दुनिया में 90% हिस्सेदारी रखता है। इस प्रकार समझा जा सकता है कि इस क्षेत्र में दीर्घकालीन प्रयासों और तकनीकी विकास के कारण चीन ने अपनी पकड़ को सबसे मजबूत करके एक तरह से एकाधिकार कर लिया है। आज की आधुनिक तकनीक बनाना उनके बिना असम्भव है। आधुनिक लड़ाकू विमान, रॉकेट, मिसाइल गाइडेड सिस्टम, बुलेट ट्रेन, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण एवं इलेक्ट्रिक कारें सभी में रेयर अर्थ मेटल्स का उपयोग होता है। इसलिए आज के समय में चीन के लिए यह एक वैश्विक दबाव बनाने का भी माध्यम बन गया, जब उसने टैरिफ के उत्तर में इनका निर्यात नियंत्रित किया तो अमेरिका जैसा देश भी दबाव में आ गया।

भारतीय दृष्टिकोण से देखें तो भारत द्वारा इन खनिजों की सप्लाई चैन को सुदृढ़ करने की दृष्टि से 2019 में तीन सरकारी इंटरप्राइजेज का एक संयुक्त प्रक्रम खनिज विदेश इंडिया लिमिटेड (काबिल) नाम से बनाया बनाया गया है जिसका मुख्य कार्य भारत में इन खनिजों को उपलब्ध कराना है। भारत सरकार ने नेशनल क्रिटिकल मिनरल मिशन के अंतर्गत इस क्षेत्र में अनुसंधान बढ़ाने हेतु अब तक आईआईटी, आईआईएससी समेत 9 संस्थानों को एक्सीलेंस सेंटर के रूप में मान्यता प्रदान की है जिसका मुख्य उद्देश्य लिथियम, कोबाल्ट एवं अन्य रेयर अर्थ एलिमेंट्स जैसे खनिजों की खोज, रीसाइक्लिंग और प्रसंस्करण हेतु स्वदेशी तकनीक विकसित करना है। भारत भी लगातार इस क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने का प्रयास कर रहा है क्योंकि रेयर अर्थ एलिमेंट्स के वैश्विक भंडार के मामले में चीन और ब्राजील के बाद भारत तीसरे स्थान पर है, लेकिन इसके उत्पादन में भारत का योगदान वैश्विक स्तर पर 1% से भी कम है।

●●●

समस्या

प्रदूषण की अजगरी बांहों में... मुम्बई

योगेश कुमार गोयल

प्रदूषण से तटीय शहर भी यदि समय रहते सतर्क नहीं हुए तो स्वास्थ्य और जीवन गुणवत्ता पर इसके दुष्परिणाम और भयावह हो सकते हैं।

समुद्र के किनारे बसी देश की आर्थिक धुरी मानी जाने वाली मुम्बई आमतौर पर अपेक्षाकृत बेहतर वायु गुणवत्ता के लिए जानी जाती रही है। इन दिनों मुम्बई दिल्ली की भांति प्रदूषण के गम्भीर होते स्तर को लेकर चर्चा में है। हालांकि यह धारणा रही है कि समुद्री हवाएं प्रदूषकों को फैलाकर वातावरण को साफ रखने में सहायक होती हैं, लेकिन मुम्बई में यह विश्वास टूटता दिखाई दिया है।

31 जनवरी को मुम्बई का वायु गुणवत्ता सूचकांक गम्भीर श्रेणी की ओर बढ़ गया और प्रभादेवी स्थित एल्फिंस्टन ब्रिज के आसपास एक्यूआई 258 दर्ज किया गया। सुबह की शुरुआत घनी धुंध के साथ हुई, सांस लेना कठिन हो गया और दृश्यता इस सीमा तक घट गई कि महानगर पर मानो प्रदूषण की मोटी चादर तान दी गई हो। जिन क्षेत्रों में समुद्र की खुली हवा राहत देने वाली मानी जाती थी, वहीं हाजी अली और वर्ली जैसे तटीय क्षेत्र भी इस बार प्रदूषण से अछूते नहीं रहे। ऐसे में महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आखिर समुद्र के किनारे मुम्बई में प्रदूषण स्तर भयावह होने के क्या प्रमुख कारण हैं?

मुम्बई में प्रदूषण के इस विकराल रूप के पीछे कई प्रमुख कारण हैं। सबसे पहला कारण मौसम और भौगोलिक परिस्थितियों का असामान्य व्यवहार है। सर्दियों में तापमान में हल्की गिरावट और 70 प्रतिशत तक पहुंची आर्द्रता के कारण 'तापीय प्रतिलोम' जैसी स्थिति बनती है, जिसमें प्रदूषक कण ऊपर उठने की बजाय जमीन के पास ही फंसे रहते हैं। समुद्र से आने वाली हवाएं जब कमजोर पड़ती हैं तो वे प्रदूषण को फैलाने की बजाय उसे शहर के ऊपर स्थिर कर देती हैं। दूसरा बड़ा कारण है अनियंत्रित शहरीकरण और निर्माण गतिविधियां। मुम्बई में मेट्रो, सड़क चौड़ीकरण, पुनर्विकास परियोजनाएं और ऊंचे भवनों का निर्माण बड़े पैमाने पर जारी है, जिनसे उड़ने वाली धूल हवा में महीन कणों की मात्रा बढ़ा रही है।

इसके साथ ही वाहनों की बढ़ती संख्या ने स्थिति को और गम्भीर बना दिया है। निजी वाहनों, डीजल बसों और मालवाहक ट्रकों से निकलने वाला धुआं पीएम 2.5 और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसे घातक प्रदूषकों को बढ़ा रहा है। औद्योगिक इकाइयां, बंदरगाह गतिविधियां और जहाजों से निकलने वाला उत्सर्जन भी तटीय शहर के प्रदूषण में मुख्य भूमिका निभा रहा है। कचरा प्रबंधन की खामियां, खुले में कचरा जलाना और ईंधन के रूप में निम्न गुणवत्ता वाले पदार्थों का उपयोग समस्या को और गहरा करता है। वायु प्रदूषण का सीधा और सबसे गम्भीर प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है। विशेषज्ञों के अनुसार अत्यधिक प्रदूषित हवा में सांस लेना प्रतिदिन कई सिगरेट पीने के बराबर हानिकारक हो सकता है। इससे अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों के संक्रमण, हृदय रोग और स्ट्रोक जैसी गम्भीर बीमारियों का संकट बढ़ जाता है।

इन्हीं गंभीर परिस्थितियों को देखते हुए मुम्बई उच्च न्यायालय ने पिछले दिनों कड़े शब्दों में टिप्पणी करते हुए कहा कि प्रदूषण से निपटने के लिए उठाए गए कदम पर्याप्त नहीं हैं। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि शुद्ध हवा में जीना नागरिकों का मौलिक अधिकार है और इसके संरक्षण के लिए ठोस, परिणामकारी प्रयास आवश्यक हैं। केवल कागजी योजनाओं से समस्या हल नहीं होगी। ●●●

बाजार

गड़बड़ाता वैश्विक आर्थिक स्वास्थ्य का थर्मामीटर

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

सोने-चांदी के भाव भावनाओं से नहीं बल्कि नीति, ब्याज दर, डॉलर और वैश्विक राजनीति से तय होते हैं। अंततः सोना और चांदी चमकते अवश्य हैं, लेकिन उनकी चमक गहरी सूझबूझ से ही लाभ देती है। मार्केट को अनिश्चितता मानकर सूझबूझ से व्यापार करना ही समझदारी है।

सहज समझ आ जाएं उसे बाजार नहीं कहते, बाजार का अर्थ ही अस्थिरता और अनिश्चितता होती है और इसी बाजार में उतार -चढ़ाव प्रतिदिन होते रहते हैं। बीते दिनों भारतीय बाजार में सोने और चांदी के भावों में रिकॉर्ड बढ़ोत्तरी हुई, फिर अचानक लोवर सर्किट लगकर दाम गिर गए। इसके बाद भी बाजार थमा नहीं, फिर कीमतें बढ़ने लगी। सोना और चांदी केवल आभूषण या निवेश के साधन नहीं बल्कि वैश्विक आर्थिक स्वास्थ्य के थर्मामीटर भी माने जाते हैं। जब दुनिया में अनिश्चितता बढ़ती है तो इनके दाम आसमान छूते हैं और जैसे ही हालात स्थिर होने लगते हैं, इनके भाव फिसलने लगते हैं। हाल के दिनों में भी यही परिदृश्य देखने को मिला। तेज उछाल के बाद अचानक गिरावट। फिर अप्रत्याशित तेजी ने बाजार और निवेशकों को पुनः सोचने पर विवश कर दिया। इसी से भारतीय निवेशक अब तक विचारमग्न स्थिति में खड़े हुए हैं।

यदि हम सोने-चांदी के भाव में उतार-चढ़ाव के प्रमुख कारण देखेंगे तो यह कुछ सीमा तक ब्याज दरें और केंद्रीय बैंक की पॉलिसी पर भी निर्भर करते हैं। जब अमेरिका का फेडरल रिजर्व या अन्य बड़े केंद्रीय बैंक ब्याज दरें बढ़ाने का संकेत देते हैं तो सोना-चांदी दबाव में आ जाते हैं। इसका कारण साफ है क्योंकि सोना ब्याज नहीं देता और ऊंची ब्याज दरों में बॉन्ड और डॉलर आकर्षक हो जाते हैं। इसके साथ दुनिया में बढ़ती महंगाई भी कुछ सीमा तक कारक है। महंगाई बढ़ने पर निवेशक सोने की ओर भागते हैं, लेकिन जैसे ही संकेत मिलता है कि महंगाई नियंत्रण में आ सकती है, सोने की चमक फीकी पड़ने लगती है और फिर एक महत्वपूर्ण कारक सट्टा बाजार और मुनाफावसूली भी है। तेजी के दौरान बड़े निवेशक भारी खरीद करते हैं और जैसे ही ऊपरी स्तर पर पहुंचते हैं, मुनाफावसूली शुरू हो जाती है, यही कारण है कि अचानक भाव लुढ़कते दिखाई देते हैं। जैसा बीते दिनों में हुआ, चाईना के बड़े निवेशकों ने चांदी खरीद अधिक कर दी तो अचानक वैश्विक बाजार में चांदी के दामों में तेजी आ गई। इसी तरह हालिया गिरावट के पीछे के कारणों में अमेरिकी अर्थव्यवस्था से सकारात्मक संकेत मिलें, फिर रोजगार और जीडीपी से जुड़े बेहतर आंकड़े आने लगें। फेड द्वारा कटौती की आशा कमजोर पड़ने लगी तो डॉलर में मजबूती और बॉन्ड यील्ड में उछाल आ गया। इन तीनों ने मिलकर निवेशकों को यह संदेश दिया कि 'अभी जोखिम कम है, सुरक्षित निवेश से बाहर निकलो।' इसी अवसर को बाजार की भाषा में बेचवाली कहते हैं। जब बेचवाली बढ़ती है तो मार्केट में दाम कम होने लगते हैं। इसी कारण चांदी-सोने ने रिकॉर्ड गिरावट भी देखा गया, पर इसके चलते डॉलर बहुत अधिक कमजोर नहीं हुआ, न होगा क्योंकि डॉलर की मजबूती के कारणों में ऊंची ब्याज दरें हैं और यह भी सत्य है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था की तुलनात्मक मजबूती अधिक होती है।

●●●

महर्षि दयानंद सरस्वती की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश ने लोगों के ज्ञान चक्षु खोलने का कार्य किया। इसमें मानव की संकीर्ण बुद्धि जनित प्रत्येक जिज्ञासा, प्रश्न का समाधान किया गया है। इसमें 14 समुल्लास हैं। यह पुस्तक तर्क पर आधारित है और अंधविश्वास या जबरन धर्म परिवर्तन के विरुद्ध है।

घर वापसी में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका

भारत कभी सोने की चिड़िया कहलाता था किंतु इस पर कभी अंग्रेजों ने, कभी मुगलों ने आक्रमण कर बार-बार लूटा और आर्थिक रुप से अशक्त बनाने का कार्य किया। स्वतंत्र भारत में बाद में अपनों ने भी कसर नहीं छोड़ी जिसके चलते भारत में एक समय ऐसा भी आया कि शांति, शक्ति, अध्यात्म वाला देश गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, आर्थिक तंगी का शिकार हुआ और यहां की भोली-भाली अशिक्षित अविवेकी जनता का ईसाई और इस्लाम के लोगों ने भरपूर लाभ उठाया। कभी ईसाइयों ने अपने जनबल शक्ति को बढ़ाने के लिए और कभी मुसलमान ने अपने वर्चस्व को बढ़ाने के लिए इनका प्रयोग किया है। इन दोनों धर्मों ने लालच देकर, भय दिखाकर, डरा धमका कर हिंदू भाइयों का धर्म परिवर्तन कराया। महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के चिंतक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। वेदों की ओर लौटो उनका प्रमुख नारा था। महृषि दयानंद ने पुनर्जागरण का नया युग प्रारम्भ किया वह लाखों लोगों के लिए आशा की किरण बन गए। उन्होंने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्यों के समक्ष सत्य असत्य का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है ताकि मनुष्य स्वयं अपना हित अहित समझ कर सत्य ग्रहण और असत्य का परित्याग करके सदा आनंद में रहे। वास्तव में यह पुस्तक एक प्रकाश स्तम्भ है जो मनुष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर,अतार्किकता से तार्किकता की ओर,अधर्म से धर्म की ओर,और अज्ञान से ज्ञान विज्ञान की ओर ले जाता है। ऐसे में महर्षि दयानंद सरस्वती की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश ने लोगों के ज्ञान चक्षु खोलने का कार्य किया। सत्यार्थ प्रकाश में मानव की संकीर्ण बुद्धि जनित प्रत्येक जिज्ञासा, प्रश्न का समाधान किया गया है। इसमें 14 समुल्लास हैं। यह पुस्तक तर्क पर आधारित है और अंधविश्वास या जबरन धर्म परिवर्तन के विरुद्ध है। सत्यार्थ प्रकाश के 13वें और 14वें समूल्लास में ईसाई और इस्लाम मतों की समीक्षा और शुद्धि अर्थात धर्म परिवर्तन या घर वापसी के सिद्धांतों की चर्चा की गई है। यह पुस्तक वैदिक धर्म के पुनरुत्थान और मत मतांतरण का विरोध करती है। मत मतांतरों के विषय में जो कुछ इस पुस्तक में लिखा गया है, वह भी प्रीतिपूर्वक सत्य के प्रकाश होने और संसार के सुधारने के अभिप्राय से किया गया है। निंदा की दृष्टि से नहीं। इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य यही है कि अविद्या जन्य नाना मतों की फैलने से संसार में जो द्वेष बढ़ गया है, इससे एक मातावलम्बी दूसरे मतानुयायी को द्वेषपूर्ण दृष्टि से देखता है वह दूर होकर संसार में प्रेम और शांति स्थिर हो। इसकी भूमिका में बताया गया है कि जिस समय हिंदू जाति, धर्म, प्राण कहलाने का अधिकार रखती थी। उस समय तक यह जाति सभ्य, शिरोमणि, संसार की शासक, जगत की गुरु कहलाती थी। जैसे-जैसे यह धर्म, प्रेम से पीछे हटी, वैसे-वैसे इसका अधोपतन होता गया। जो जाति भूतल के देशों का शासन करती थी आज धर्म प्रेम की त्रुटि से उसके देश का शासन भी उसके हाथ में नहीं रहा। आज हमारे देश में धर्म के नाम पर नाक-भौहें सिकोड़ी जाती हैं, वही क्रिश्चियन जाति धर्म उन्नति के लिए प्रत्येक वर्षों में करोड़ों रुपए व्यय करती है। इस्लाम धर्म के

डॉ. नीतू गोस्वामी

प्रचार-प्रसार के लिए विदेश से फंडिंग होती है। इस बात को भली प्रकार से जानते हुए भी हिंदू नेता धर्म रक्षा में जुबान नहीं खोलते। यह भारत का दुर्भाग्य है कि भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यहां राजनीतिक दलों के बन जाने के बाद सब अपनी अपनी डपली अपना अपना राग अलापने में लगे हैं और देश के धर्म संस्कृति सम्प्रदायों को उन्होंने अपनी सत्तारूढ़ बने रहने का आधार बना लिया है। इस संदर्भ में दुष्यंत कुमार की दो पंक्तियां याद आती है -

कहां तो तय था चिरागां हर एक घर के लिए
कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए ।

आज भारत देश राजनीति का अखाड़ा बन चुका है जहां सम्प्रदायों, मतों का पिशाच नग्न नृत्य कर रहा है जिसके चलते भारत की सनातन संस्कृति आहत है। हिंदू धर्म आज के परिवर्तनशील युग में हमें सत्यार्थ प्रकाश का अवलोकन करना चाहिए ताकि धर्म के मूल स्वरूप को पहचाना जा सके। इसमें 12वीं समुल्लास में हिंदू धर्म ग्रंथों पर आलोचना पूर्ण दृष्टि से चर्चा की गई है और 13वें में ईसाई धर्म के सत्य पर प्रकाश डाला गया है। ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक बाइबल है। ईसाई लोग इसी का अनुकरण करते हैं। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश में सभी धर्म के स्वरूप पर गहन चर्चा कर स्पष्ट किया है कि मानव के लिए, मानवता के लिए किस धर्म का अनुकरण सर्वोपरि है, स्वतः चिंतनीय है। आज के इस दौर में इस ग्रंथ की प्रासंगिकता सहज है। धर्म की पुनर्प्रतिष्ठापना के लिए आज इसका अध्ययन प्रत्येक हिंदू सनातनी को करना होगा। कहा भी गया है धारयते इति धर्मः जो धारण किया जाए वह धर्म है और धारण वह किया जाता है जो धारण करने योग्य हो। हिंदू धर्म हजारों वर्षो के चिंतन, अनुभव, साधना, त्याग, तपस्या और सामाजिक जीवन की चेतना से विकसित व्यापक ज्ञान का मार्ग है। यह पूजा पद्धति नहीं समग्र जीवन व्यवस्था है। अमेरिकी खगोलशास्त्री कालसेगन ने कहा दुनियां अरबों वर्षों पहले बनी ये हिंदू धर्म बताता है शेष सभी धर्म एक लाख वर्ष तक भी नहीं पहुंचे। हिंदू धर्म कहता है अहम् ब्रहास्मि तत्त्वमसि मैं ब्रह्मा हूं और तुम भी वही हो। जबकि अन्य धर्मों में ऐसा नहीं है। यहां कहा जाता सर्वे भवंतु सुखिनाः, उदारचरितानम् तु वसुधैव कुटुम्बकम। इस संदर्भ में देखें तो अन्य मतों में सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की भावना का सर्वथा अभाव है। वर्तमान समय में मत मतांतरों के स्वरुप को जानने और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना के लिए धर्म के संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश का अवलोकन करना श्रेयस्कर है।

●●●

नागरिकों की यातायात सुविधा, सुरक्षा, किफायती किराए व पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु दिल्ली में भारत टैक्सी सेवा शुरु की गई है। हलांकि यह सेवा अभी दिल्ली व एनसीआर के नागरिकों के लिए है और आने वाले दिनों में जल्द ही देश के अन्य राज्यों में शुरु किया जाएगा।

दिल्ली की सड़कों पर सरपट दौड़ेगी 'भारत टैक्सी'

दिल्ली व एनसीआर की सड़कों पर सरपट दौड़ेगी 'भारत टैक्सी'। वो भी कम किराया व किराए में पारदर्शिता व सुगम यात्रा को प्राथमिकता देगी। भारत टैक्सी कोऑपरेटिव राइड-हेलिंग सर्विस को केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन के प्लेनरी हॉल में आयोजित एक कार्यक्रम में लॉन्च किया। इस लॉन्च के साथ ही कैब एग्रीगेटर बाजार में ओला और ऊबर को सीधी चुनौती मिलने की चर्चा तेज हो गई है।

दावा है कि यह सेवा ड्राइवरों को ज्यादा कमाई और यात्रियों को पारदर्शी किराया देगी। अमित शाह द्वारा उक्त कार्यक्रम के अवसर पर भारत टैक्सी रैली भी निकाली गई, जिसमें ड्राइवरों और यात्रियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान अमित शाह ने कहा कि भारत टैक्सी ड्राइवरों को मुनाफे का मालिक बनाती है और उन्हें सम्मान व गरिमा प्रदान करती है।

भारत टैक्सी ऐप अब दिल्ली-एनसीआर के सभी यूजर्स के लिए उपलब्ध है। इससे पहले यह सेवा इस क्षेत्र में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर चल रही थी। कम्पनी का कहना है कि आने वाले महीनों में इसे अन्य राज्यों और शहरों में भी शुरू किया जाएगा। यहां तक कि 'भारत टैक्सी' ने यात्रियों व चालकों की सुरक्षा तकनीक पर विशेष जोर दिया है। 'भारत टैक्सी' नो-कमीशन मॉडल पर चलाया जाएगा। जिसके अंतर्गत ड्राइवरों से कोई कमीशन नहीं लिया जाएगा

ड्राइवर को सवारी से मिली पूरी रकम मिलेगी। यहां तक कि निजी एप में लगने वाले भारी कमीशन से ड्राइवरों को राहत भी मिलेगी।

भारत टैक्सी के सीईओ विवेक पांडे के अनुसार फिलहाल ड्राइवरों से कोई शुल्क नहीं लिया जा रहा है। भविष्य में ड्राइवरों से 25-30 रुपये प्रति दिन का मामूली शुल्क लिया जा सकता है, जो निजी एप के कमीशन की तुलना में काफी कम होगा।

विदित हो कि भारत टैक्सी को सहकारिता मंत्रालय का समर्थन प्राप्त है, लेकिन यह सरकारी सेवा नहीं है। 'भारत टैक्सी' की योजना भविष्य में ड्राइवरों को सरकारी लोन उपलब्ध कराने की है ताकि वे अपनी स्वयं की टैक्सी खरीद सकें। कम्पनी का मानना है कि इससे रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और ड्राइवर आत्मनिर्भर बनेंगे। ऐप में मिलने वाले फीचर्स में शामिल हैं:

रियल-टाइम ट्रैकिंग

वेरिफाइड ड्राइवर

मल्टीलिंगुअल सपोर्ट

24÷7 कस्टमर केयर

इसके अलावा भविष्य में भारत टैक्सी को मेट्रो नेटवर्क से जोड़ने की भी योजना है। ●●●

now at just **8.10%*** p.a. with

TJSB Auto Finance Loan.

T&C Apply*

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204

प्रकृति की गोद में राष्ट्र की पहचान

दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में स्थित है अमृत उद्यान। यह उद्यान वर्ष भर खुला नहीं रहता बल्कि सर्दियों में ही केवल उद्यान को पर्यटकों के लिए खोला जाता है। देशी और विदेशी पर्यटक देश की राजधानी दिल्ली घूमने के लिए प्रति वर्ष बड़ी संख्या में आते हैं। इस दौरान लालकिला, कुतुम्ब मीनार, जतंर-मंतर, इंडिया गेट आदि ऐतिहासिक स्थलों को देखते हैं, ऐसे में वो राष्ट्रपति भवन का अमृत उद्यान देखना नहीं भूलते। विदित हो कि सामान्य जनता के लिए अमृत उद्यान 3 फरवरी 2026 से 31 मार्च 2026 तक खुला रहेगा।

अमृत उद्यान में अलग-अलग प्रजाति के सुंदर फूल देखने को मिलते हैं। बगीचे में 145 से ज्यादा किस्मों के गुलाब लगे हुए हैं। इसके अलावा 85 तरह के अन्य फूलों के पौधे भी हैं। रंग-बिरंगे ट्यूलिप लोगों को विशेष आकर्षित करते हैं। साथ ही झरनों जैसी बहती पानी की धाराएं, छोटी नहरें और शांत वातावरण वाला बरगद का बगीचा भी विशेष आकर्षण का केंद्र है। 3 फरवरी 2026 से 31 मार्च 2026 के बीच विशेष अवसरों या त्योहारों पर उद्यान को सामान्य जनता के लिए बंद रखा जाता है। यहां आने के लिए प्रवेश शुल्क मुफ्त है, लेकिन ऑनलाइन बुकिंग आवश्यक है। अमृत उद्यान में लगे क्यूआर कोड स्कैन करके फूलों और पौधों की जानकारी ले सकते हैं। इसके प्राकृतिक सौंदर्य एवं अनुपम छटा को देखकर वयस्क, वृद्ध ही नहीं बच्चे भी मोहित हो जाते हैं।

15 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला अमृत उद्यान राष्ट्रपति भवन की आत्मा के रूप में वर्णित किया जाता है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम और रामनाथ कोविंद के कार्यकाल के दौरान हर्बल गार्डन, टैक्टाइल गार्डन, बोन्साई गार्डन और आरोग्य वनम जैसे और उद्यान विकसित किए गए। अमृत उद्यान में कलकल बहती धारा, मूर्तिकलानुमा फव्वारे, पत्थर के रास्ते और एक परावर्तक कुंड, जो एक ताजगी भरा और शांत अनुभव प्रदान करते हैं। इसके अलावा आगंतुक कई आकर्षणों का आनंद ले सकते हैं, जिनमें बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया बाल वाटिका उद्यान शामिल है, जिसमें 225 साल पुराने शीशम के पेड़ की कहानी बताई गई है, साथ ही एक ट्रीहाउस, प्रकृति की कक्षा आदि भी हैं। इसके अलावा बोन्साई और गोलाकार उद्यान हैं जिनमें विविध प्रकार के पेड़-पौधे और जीव-जंतु पाए जाते हैं। साथ ही एक जीवंत फूड कोर्ट भी है जहां आगंतुक जलपान कर सकते हैं और चल रही प्रदर्शनियों को देख सकते हैं। म्यूजिक फांउनटेन को देखकर सहज ही पर्यटक अमृत उद्यान की ओर आकर्षित हो जाते हैं। ●●●

राष्ट्रपति भवन हरे-भरे स्वर्ग के रूप में अमृत उद्यान के लिए भी प्रसिद्ध है। यह उद्यान अपना असीम सौंदर्य बिखेरता है जो आने वाले पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र होता है। रंग-बिरंगे फूल, हरियाली और शांत वातावरण सहज ही आगंतुकों का मन मोह लेते हैं।

लाभ

बिछिया केवल सुहाग का प्रतीक नहीं है बल्कि इसे पहनने से हम कई बीमारियों से दूर रह सकते हैं। बिछिया केवल चांदी की होती है और इसे पैरों के मुख्य दो ही ऊंगलियों में ही क्यों पहनी जाती है, इस पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

बिछिया और स्त्री स्वास्थ्य

हिंदू धर्म में बिछिया पहनने की परम्परा है, लेकिन विवाहित स्त्रियां ही इसे धारण करती हैं। ये अलग बात है कि फैशन के रूप में युवतियां भी बिछिया धारण कर रही हैं। बिछिया को सुहाग का प्रतीक माना जाता है। इसको पहनने से कई तरह के स्वास्थ्य लाभ भी मिलते हैं। वैसे तो कई विवाहिता सभी पैरों के ऊंगलियों में बिछिया धारण करती हैं, लेकिन पैरों की दूसरी उंगली में पहनी जाने वाली बिछिया गर्भाशय को स्वस्थ रखने, प्रजनन क्षमता बढ़ाने और हार्मोनल संतुलन बनाए रखने में सहायता करती है। यह एक्यूप्रेशर का काम करती है, जिससे रक्तचाप नियंत्रित रहता है और तंत्रिका तंत्र को शांति मिलती है।

बताया जाता है कि बिछिया का दबाव साइटिक नर्व की एक नस को दबाता है, जिससे गर्भाशय और प्रजनन अंगों तक रक्त संचार सुचारू रूप से होता है। यह ओवरीज को भी स्वस्थ रखने में सहायता करती है। इतना ही नहीं बिछिया केवल गर्भाशय व प्रजनन अंगों को स्वस्थ नहीं रखती बल्कि हार्मोनल संतुलन, थायराइड, मासिक धर्म चक्र को नियमित, ब्लड प्रेशर का नियंत्रण रखने आदि में सहायक होती है।

बताया जाता है कि बिछिया चांदी की होती है और चांदी ठंडी प्रकृति की धातु है, जिसे पहनकर शरीर को ठंडक मिलती है और मानसिक शांति का अनुभव होता है। बिछिया हमेशा चांदी की ही पहनी जाती है क्योंकि चांदी को चंद्रमा का कारक माना गया है। यह मन को शांत रखती है और ग्रहों की बाधा दूर करती है। यह पृथ्वी की ध्रुवीय ऊर्जा को भी अवशोषित करती है। सोने की बिछिया नहीं पहनी जाती क्योंकि सोना भगवान विष्णु से जुड़ा है और पैरों में पहनना अपमान माना जाता है। बिछिया पहनने के कई धार्मिक कारण भी हैं। शास्त्रों के अनुसार पैरों की दूसरी और तीसरी उंगली में बिछिया पहनने से वैवाहिक जीवन सुखमय होता है और मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। यह नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने का प्रतीक भी है।

रामायण से जुड़ा एक बिछिया का भी प्रसंग है, जब रावण सीता माता का हरण कर रहा था, तब माता सीता ने अपने आभूषणों के साथ अपने बिछिया भी मार्ग में फेंक दिए थे ताकि श्रीराम उन्हें पहचान सकें। ●●●

दादा लाड और भारतभूषणदासजी महाराज को मिलेगा श्रीगुरुजी पुरस्कार

शेतीभूषण श्रीरंग देवबा लाड (दादा) और वाराणसी के आचार्य श्री महंत भारतभूषणदासजी महाराज को इस वर्ष के 'पूजनीय श्रीगुरुजी पुरस्कार' से सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई। 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जनकल्याण समिति की ओर से प्रत्येक वर्ष उक्त पुरस्कार प्रदान किया जाता है। आगामी शनिवार 14 फरवरी को पुणे में कार्यक्रम के दौरान यह पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय प.पू. सरसंघचालक मा. स. गोळवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी के जन्मदिवस पर उक्त पुरस्कार प्रदान किया जाता है। यह राष्ट्रीय पुरस्कार का 31वां वर्ष है। जनकल्याण समिति के कार्यवाहक राजन गोर्हे ने विगत बुधवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में पुरस्कार देने की घोषणा की। उक्त पुरस्कार में प्रशस्तिपत्र, सम्मान चिन्ह और एक लाख रुपए नकद पुरस्कार शामिल है। उन्होंने प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि शोध क्षेत्र के लिए लाड को और समाजप्रबोधन क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने हेतु भारतभूषणदासजी महाराज को यह पुरस्कार दिया जा रहा है। प्रसिद्ध उद्योगपति डॉ. अभय फिरोदिया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहेंगे। संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेयजी होसबाळे कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहेंगे। उक्त पुरस्कार आगामी 14 फरवरी को पुणे के सम्बायोसिस विमाननगर स्थित एसवीसी सभागृह में प्रदान किए जाएंगे।

मिलिंद रथकंठीवार को सारेगामा कला रत्न पुरस्कार

पुणे। महाराष्ट्र के आर्य वैश्य समाज के कुल प्रतिभाशाली व्यक्तियों को जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि प्राप्त की है, को सारेगामा कल्चरल ग्रुप की ओर से कलारत्न व कलागौरव पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया जाएगा। जो नागपुर, पुणे और मुम्बई स्थित सारेगामा कल्चरल ग्रूप के निदेशकों डॉ. संजय व डॉ.वर्षा उत्तरवार द्वारा प्रदान किया जाएगा। सुप्रसिद्ध रेखाचित्रकार मिलिंद रथकंठीवार को भी उक्त पुरस्कार देने की घोषणा की गई। पुणे स्थित बालगंधर्व रंगमंदिर में आगामी 11 फरवरी उक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। उक्त जानकारी प्रमुख आयोजक डॉ संजय एस.उत्तरवार ने दी।

प्लास्टइंडिया 2026 का आयोजन

दिल्ली के प्रगति मैदान में प्लास्टइंडिया 2026 का आयोजन आगामी 5- 10 फरवरी तक किया जा रहा है। विनोद राय इंजीनियर्स प्राईवेट लिमिटेड की ओर से उक्त आयोजन में हॉल-7, आउटडोर स्टॉल ओडी-01 स्टॉल लगाया जा रहा है। प्लास्टइंडिया 2026 के आयोजन में विनोद राय इंजीनियर्स प्राईवेट लिमिटेड द्वारा रोटेशन मोलडिंग मशीन, शीटमेटल और सीएनसी मोल्डस, कस्टम मोलडिंग सर्विस का प्रदर्शन किया जाएगा। उक्त स्टॉल पर जाकर आप कम्पनी के सभी उत्पादों को देख कर उसकी जानकारी एकत्रित कर उसका लाभ उठा सकते हैं।

केंद्रीय श्रम व रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडवीय ने विगत दिवस भारतीय मजदूर संघ के 21वां त्रिवार्षिक अखिल भारतीय अधिवेशन का पुरी में भव्य उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राष्ट्र के निर्माण औ विकास में श्रमिक वर्ग व युवा शक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य बी. भागय्या, सर्गेई चेर्नोगायेव, मिसिको मियामोटो, सुरेंद्र पांडेय आदि उपस्थित थे।

Emerald
WORLD PARK
WORK | THRIVE | BELONG
RERA NO. P-IND-25-5764
A MIXED-USE DESTINATION WITH
CLEAR PLANNING
9 HIGH STREET RETAIL SPACES
95 PREMIUM OFFICE SPACES
RANGING FROM 1100-2200SQ. FT.
WELLNESS CORNERS
AMPHITHEATRE
CENTRAL ATRIUM
SPORTS ZONE
OFFICE SPACES
Site: 18-B & 18-C, Scheme No.94-C, Adjacent to Velocity Multiplex, Ring Road, Indore, Madhya Pradesh-452016 | Contact: +91-76106 76106